

Suça. 2, 446, 17.

2. धञ् (= 1. धञ्) adj. (nom. धञ्) am Ende eines comp. röstend P. 8, 2, 36. धाना° Sch. Vop. 3, 77. fg.

धञ्जन (von 1. धञ्) n. das Rösten P. 6, 4, 47. Sch. — Vgl. भञ्जन.

धञ्, भुञ्ति untertauchen, versinken Dhātup. 28, 101. — Vgl. क्रुञ्.

धण्, धैणाति einen Ton von sich geben Dhātup. 13, 9.

धभङ्ग m. = धूभङ्ग Uḍḍval. zu Unādis. 2, 68.

धम्, धैमति (ep. auch med.) und धैम्यति (धम्यात् Pār. Grh. 3, 7)

Dhātup. 20, 20. 26, 96. Naigh. 2, 14. Nir. 6, 20. P. 3, 1, 70. 7, 3, 74. Vop.

8, 67. 125. 11, 3. वधाम, वधमिथ und धेमिथ, वधमुस् und धेमुस् P. 6, 4,

124. Vop. 8, 52. धमिष्यति; धममीत्; धमितुम् und धातुम्. धात्वा; partic.

धात्. 1) umherschweifen, sich unstüt, ohne bestimmte Richtung bewe-

gen, umherirren: धमति, धमामि u. s. w. MBh. 3, 2647. 12892. R. 3, 72,

12. 4, 49, 29. R. 1, 23. यावद्धमति न भूमौ देशदेशात्तरं कृष्टः (नरः) Spr.

2794. धमन्संपूज्यते राजा धमन्संपूज्यते द्विजः । धमन्संपूज्यते योगी स्त्री धम-

न्तो विनश्यति ॥ 4679. Kām. Nit. 13, 45. Ashtāv. 7, 1. Kathās. 3, 46.

10, 130. 27, 48. 28, 28. 29, 58. 49, 227. Pañkar. 1, 13, 15. Rāga-Tar. 5,

332. Sāh. D. 59, 2. Pañkat. 43, 4. 68, 12. 93, 23. गृहेषु भित्तार्थमधमत् Da-

çak. in Benf. Chr. 194, 2. Hār. 66. तयासंवत्सरो राजा धमत्यन्ध इवाधनि

tappt Varāh. Brh. S. 2, 9. वैराग्ये संचरत्येकः नीतौ धमति चापरः Spr.

2903. वयं च — ग्रन्था इव वधामः (entweder धमामः oder mit der v. l.

का यामः zu lesen) Hit. 82, 13. धमामहे R. 4, 49, 9. 5, 32, 30. धममाण

MBh. 12, 4284. धाम्यति, धाम्यत् (partic.) 13, 4316. Kathās. 9, 9. 28, 115.

32, 148. 40, 84. Rāga-Tar. 5, 146. Pañkat. 82, 1. Hit. 17, 15 (धमन् v. l.).

क्रव्याशिनः — धाम्यत्यभीता परितः पुरं नः Bhaṭṭ. 12, 72. वधाम MBh.

3, 14377. Kathās. 28, 183. 28, 30. 38, 91. Mār. P. 61, 34. Pañkar. 1, 6, 2.

स च सर्पस्तं पृष्ठे कृत्वा चित्रपदक्रमं वधाम Hit. 127, 4. भीमरवैर्मेधैर्बध-

मूर्गगणेश्वरः Hariv. 6831. धमिष्यामि Pañkar. 1, 14, 70. Bhaṭṭ. 16, 32.

धमितुम् Pañkat. 69, 6. धात्वा Kathās. 32, 59. Rāga-Tar. 6, 45. Pañkat.

69, 15. pass. impers.: वक्रुशो धमामि ते चाद्य (धमितश्चाद्य ed. Bomb.) R.

2, 96, 8. भित्तौ धम् von Ort zu Ort betteln gehen Kathās. 18, 135. 36, 76.

taumeln: मद्यपीत इव धमन् Bhaṭṭ. 6, 48. Spr. 1971. Kathās. 37, 72. च-

त्तार (so die neuere Ausg.) च भृशं रक्तं वधाम च गतामुचत् taumelte wie

ein Sterbender Hariv. 8898. vom Hinundherfliegen der Bienen: तत्र

धमत्येव मुधा षडङ्गिः Spr. 2673. 4728. Varāh. Brh. S. 12, 9. Vid. 283.

चित्तयामि तदाननं कुटिलधु कोपभरेण शोणपद्ममिवोपरि धमताकुलं धम-

रेण Gīt. 3, 5. षट्पदा धाम्यति Spr. 2317. Gīt. 2, 20. Kaurap. 34. von

den Bewegungen des Kindes im Mutterleibe Buāg. P. 3, 31, 4. der Zunge

im Munde: द्वात्रिंशद्विंशद्विंशमध्ये धमसि (जिह्वे) नित्यशः Spr. 1267. vom

Hinundhergehen der Augen: मद्भ्रमदृष्टम् Spr. 4729. दृष्टिर्धाम्यति मे ऽतीव

कृदयं दोषतीव MBh. 1, 2062. दृष्टिर्धाम्यति v. l. für नश्यति so v. a. das

Auge wird unsicher, schwach (im Alter) Spr. 831. von unregelmässigen

Bewegungen lebloser Dinge: धमति पवनधूतः सर्वतो ऽग्निर्नाते R. 1,

26. धमसि (धम् घसि Schol.) स्वलदसि Çat. Br. 14, 9, 3, 9. घावर्तवेगाद्भ-

मता मेघेन Ragh. 13, 14. करोति विश्वस्थितिसंयमोदयं यस्येप्सितं नेप्सित-

मीतितुर्गुणैः । माथा यथायो धमते तदाश्रयं प्रावणाः wie sich eine Magnetenadel

hinundher bewegt Buāg. P. 5, 18, 38. व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र धमति लो-

कवत् 4, 11, 17. (उद्धमता तया) धमत्याविद्धमखिलं ब्रह्माण्डम् in unruhiger

Bewegung sein Mār. P. 78, 9. — 2) durchstreichen, durchstreifen, durch-

wandern; mit dem acc.: तं देशं वक्रुशो धमन् MBh. 1, 5184. महीम् 3,

2684. 13068. भूतलम् Spr. 4306. जगत् R. 4, 2, 17. लोकान् Prabh. 101, 9.

स्वनगरम् Hit. 39, 19. शरणयानीम् 47, 12. पृथिवीम् 64, 4. पुरीम् Kathās.

27, 44. 50. पुरीं तामभितो (adv. oder praep.) धात्वा 47. धातुं सर्वतीर्थानि

39, 233. देशात्तरम् Pañkat. 100, 2. धेमुः शिलोच्चयास्तुङ्गान् Bhaṭṭ. 7, 55.

दिश्वएडलं धमसि मानस Spr. 1736. — 3) sich drehen, sich im Kreise

bewegen: कुलालचक्रवत्तागस्तदा तूर्णमथाधमत् MBh. 7, 1151. घलातच-

क्रवत्तूर्णं धममाणं रणाजिरे Hariv. 10827. विजुचक्रं धमत्याशु 10828.

दिशो ऽनु धमतः (gen. partic.) सर्वाः MBh. 4, 1721. शश्वद्भाम्यति चक्रिणोः

Spr. 4723. धममाणो ऽम्भसि धृतः कूर्मरूपेण मन्दरः Bhāg. P. 8, 5, 10.

vom Kreislauf der Gestirne: ग्राह्यं जन्म ध्रुवस्य धमति नियमितं यत्र

तेजस्वि चक्रम् Spr. 936. (येन) सूर्यो धाम्यति नित्यमेव गगणे 1994. सद्यं

धमति देवानामपसद्यं सुरादिषाम् । उपरिष्ठाद्गोलो ऽयम् Sūryas. 12, 55.

ग्रहः — माण्डले मरुति धमन् 76. 80. Verz. d. Oxf. H. 41, a, N. 2.

(तम्) सामन्ता परितो धेमुर्धुवं ग्रहगणा इव umkreisten Kathās. 18, 5. —

4) hinundher schwanken so v. a. in Verwirrung sein; vom Geiste: धे-

मतीव च मे मनः Bhāg. 1, 30. अमुष्मिन्धमते मनो मे Buāg. P. 5, 12, 4. एत-

द्भाम्यति (एतत् = एतत्प्रति Schol.) मे बुद्धिर्दिपार्चिरिव वायुना 7, 1, 20.

न वेद्मि किञ्चिन्मोहेन धमतीव हि बुद्धयः Mār. P. 76, 31. वाचस्पती-

नामपि वधमुर्धियः Bhāg. P. 4, 16, 2. धमन्नेतो मे Kusum. 1, 9. त्रैलोक्ये

सकले — धममाणे Mār. P. 106, 47. irren, im Irrthum sein: अभरण-

कारस्तु तालव्यात् इति वधाम Siddh. K. 132, b, 2. fg. — partic. धात्

1) umherstreichend, umherirrend; sich hinundher bewegend, taumelnd:

एको ऽथेन स राजर्षिर्धात्तः MBh. 13, 534. Spr. 4079. धात्तः पर्वणि (रा-

जुः) 3139. काक Ragh. 12, 23. घपयातं कृतं पृष्ठे धात्तं रणपलायितम् MBh.

3, 733. संधमधात्तलोचना Mār. 61, 21. धात्तम् impers. es ist umherge-

strichen worden Spr. 2079 (st. धात्तं 2080 ist gewiss धात्ता zu lesen,

wie eine Aut. hat). n. das Umherstreichen, Umherirren, Sichhinundher-

bewegen: वरं पर्वतदुर्गेषु धात्तं वनचरैः सह Spr. 2746. किं प्रभूतधात्तेन

Pañkat. 69, 8. धात्तपतत्पतंग Spr. 2389, v. l. Suça. 1, 118, 1. eine best.

Kampfart Hariv. 11048 (S. 791). 13494. 13977. — 2) durchstrichen,

durchwandert: °तीर्थ Kathās. 39, 224. — 3) sich drehend, rollend: एष

धात्ते (= घसिरे Schol.) रये तिष्ठन् MBh. 3, 1931. अधात्ते रये 3, 12029.

3, 7218. — 4) verwirrt, betäubt; im Irrthum befindlich: अग्निनाशात्क्रि-

याधंशाद्भाता लोकान्नयः MBh. 1, 924. °चक्राक्त Suça. 1, 22, 14. धात्ताकु-

लितचेतन R. 2, 72, 18. 6, 8, 37. °चिता 3, 53, 36. °बुद्धि Verz. d. Oxf. H.

50, b, 25. संशय° (मानस) Rāga-Tar. 3, 90. धनलवमधुपानधात्तसर्वेन्द्रिय

Spr. 1934. भय° Z. d. d. m. G. 14, 370, 22. नहि ते मुनयो धात्ताः सर्वज्ञ-

त्वातेषाम् im Irrthum befindlich Madhus. in Ind. St. 1, 23, 25. Kap. 2, 23.

Ashtāv. 14, 4. नक्षत्रेके युगपद्भाता भवन्ति Schol. zu Gaim. 1, 19. n. Irr-

thum Kaṇ. 7, 2, 5. Schol. zu Kap. 1, 154.

— caus. धर्मयति (Dhātup. 19, 67) und धर्मयति 1) umherstreichen —,

umherirren lassen, hinundher treiben, — bewegen: वने धमयता Mahān.

181. धाम्यते दुर्गमेष्टपि Spr. 2688. Mār. P. 14, 86. वक्रुशो धमितश्चाद्य

R. ed. Bomb. 2, 96, 8. सा वध्यमाना समरे पाण्डुसेना मरुतामभिः । धाम्यते

वक्रुधा राजन्माराहतेनेव नैर्जले ॥ MBh. 6, 5521. इति कृतपरमार्थैरिन्द्रियै-

र्धाम्यमाणः Spr. 434. धामयामास यमाज्ञामिव तर्जनीम् Kathās. 17, 88.